सद्गुरु तत्व बोध

SADGURU TATV BODH

ubl fnYyh
vad & 118

Jh lkbl 'kd % 31
tuojh& 2013

AA Å; Jh lkbukFkk; ue% AA

AA Å; Jh lnx: ukFk nknk; ue% AA

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

x: cèkq Hkfxuh ;k

समिति के इस कार्य में श्री गुरूपौर्णिमा और श्री विजया दशमी का जितना महत्व है उतना ही प.पू. हाजी हजरत मलंग बाबा के उरुस महोत्सव को दिया जाता है, इसका कारण है – उनका स्थान जो इस कार्य की बुनियाद है। श्री साई आध्यात्मिक समिति का कार्य ईश्वर नियोजित है। वह किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं था। जिस तरह हज़ारों साल पहले देवदेवताओं की शक्ति को आह्वानित करके उनका 'पीठ' (स्थान) निर्माण किए गए, उसी प्रकार आगे के जमाने के कल्याण के लिए विश्व का पालन करने वाले, दुनिया की मानवजाति को एकत्रित लाने वाले और सुख शांति पाने का सुलभ मार्ग बतलाने वाले शक्ति का 'पीठ' भूमि पर निर्माण करना आवश्यक था। इस कार्य को कार्यान्वित करने के लिए दत्त पंथ की शक्ति थी, नाथ पंथ की सिद्ध सिद्धांत पद्धति थी मगर इनको जोड़ने के लिए जो पूर्व तैयारी करनी थी वह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण था। यह कार्य सूफी पंथ की जिन विभूतियों ने अपनाया उनमें 'प.पू. हाजी बाबा' का स्थान अव्वल है। यह कार्य निरंतर रूवरूप में कार्यन्वित होता रहे इसके लिए अनेक सेवक माध्यमों की आवश्यकता थी। अतः दीक्षा द्वारा इन सेवक माध्यमों में शक्ति संक्रमण करना आवश्यक था, जिसके लिए उनमें परमार्थ विषय के प्रति रुचि निर्माण होना जरूरी था और ऐसी रुचि निर्माण होने के लिए उन्हें प्रांपचिक दुःख निवारण होने का मार्ग दिखलाना आवश्यक था। इस कार्य के लिए जीवन में 'विमोचन' साधन की आवश्यकता थी और विमोचन कार्य के लिए विभिन्न साधनों माध्यम की तलाश इन विभूतियों को थी आर यह कार्य श्री सद्गुरूनाथ दादा के माध्यम से उचित समय पर शुरू हुआ।

गुरु आज्ञानुसार उस समय वं. दादा श्री साईनाथ महाराज की सेवा कर रहे थे और लोगों को मार्गदर्शन कर रहे थे। ऐसे समय एक जुमेरात के दिन शाम को एक फकीर वहाँ आया और उसने पुकारा, "ओ साई बाबा के भक्त, नीचे आ जाओ।" वं. दादा जब नीचे आये तो उस फकीर ने दूध मांगा और उसे पीकर वहाँ से चला गया। उस रात वं. दादा ने एक सपना देखा और उस सपने में एक बहुत बड़ा पहाड़ देखा जिस पर एक दरगाह था। वही फकीर उस पहाड़ को पार करते हुए नज़र आया। दरगाह के पास आते ही वह पीछे मुड़ा और वं. दादा से उसने कहा, "हम यहाँ रहते हैं।" वं. दादा की नींद खुल गई। उठकर उन्होंने हाथ जोड़े और प्रार्थना की, मगर उस सपने का अर्थ जान नहीं पाये। कुछ दिनों बाद श्री साईनाथ महाराज ने

वं. दादा को श्रीक्षेत्र औदुंवर को जाने की आज्ञा दी मगर वहाँ किस सेवा का अवलम्ब करना है इसका ज्ञान वं. दादा को नहीं था। मगर पहले ही दिन जब अभिषेक पूजन के बाद आरती के लिए वं. दादा खड़े रहे तो उन्हें हाजीमंलग बाबा का दर्शन हुआ। सफेद दाड़ी, कफनी, शफ़ाफ की माला और हाथ में संर्पाकृति डंडा – ऐसा रूप सामने खड़ा था।

वं. दादा जब अपनी सेवा स्थल पर जा बैठे तो उन्हें हाजीबाबा के ऊर्दु शब्द सुनाई दिये और सेवा का मार्गदर्शन हुआ अतः आगे भी होता रहा। इस तरह लगभग सालभर सेवा, श्री गुरू चरित्र, परायण, ऊँकार साधना, नामःस्मरण, महामंत्र का जाप आदि सब करने के उपरांत एक दिन उन्होंने वं. दादा से कहा कि 'आगे जो कार्य होना चाहिए उसके लिए 'परकायाप्रवेश' इस साधन की प्राप्ति कर लेना आवश्यक है, अतः मैं तुम्हारे माध्यम में प्रवेश करने वाला हूँ।' इसके पश्चात वं. दादा की सेहत बहुत ही नाजूक बन बई। काफी थकान महसूस होने लगी, भूख न प्यास, न नींद न ताकत – ऐसी अवस्था हो गई थी। दिनरात वे एक खम्बे से टिककर बैठे रहते थे, मगर उन्हें खुद को क्या हो रहा है यह बताने का होश ही न था। इसी हालत में 28 दिन बीत गये, फिर उन्होंने उठकर उसी अवस्था में स्नान किया और फिर से आकर बैठ गये। आवाज आयी – "सलाम अलेकूम।" उस वक्त वं. दादा भिलवड़ी गाँव में अपने मामा जी के साथ रह रहे थे। मामा जी को ऊर्दु का ज्ञान था, जिसके कारण वे उनके आने का मकसद समझ गये और उसकी बातें भी समझने लगे। बाद में इसी तरह वं. दादाजी के माध्यम में हाजी बाबा का "आगमन" होता रहा। पहले पहले तो इस 'संचार अवस्था' के बाद वं. दादाजी को काफी तकलीफ होती थी, मगर धीरे–धीरे आदत से यह तकलीफ दूर हो गई। 'संचार' शब्द सुनने से जो कल्पनाएँ की जाती है उनसे यह अवस्था बिल्कुल भिन्न थी। वं. दादा जी निज़ी उपासना, साधना तथा उनका देहिक विकास इन सब के कारण वह शक्ति उनमें पूर्ण रूप से समा जाती थी; अतः 'शरीर का हिलना' आदि तरह के आभास नहीं होते थे। देखने वाले को सिर्फ वं. दादा मराठी में और हाजी बाबा ऊर्दु में बोलते हैं इतना ही फर्क दिखाई देता था।

'संचार' अवस्था की आदत हो जाने के बाद हाजी बाबा के जरिये 'कामकाज' होने लगा। इनके प्रमुख उद्देश्य दो थे – वं. दादा के शरीर को यह शक्ति धारण करने की आदत होना, तथा इस शक्ति से निराकरण सूचित किये जाने पर लोगों के दुःख–दर्द तो दूर होते ही थे अपितु वं. दादा की शक्ति का संचय अगली साधना सिद्धताओं के लिए होना ज़रूरी था। इस समय 'कामकाज' सुबह शाम होता था तथा लोगों के घर जाकर भी 'कामकाज' किया जाता था। अन्य समय हाजी बाबा 'मुलाखात' माध्यम से भक्तों को ज्ञान देने का कार्य करते थे। 'मुलाखात' का अर्थ है – "भक्त का अलौकिक गुरूशक्ति से मिलन।" "दिया उसका भला, नहीं दिया उसका भी भला" इस बोध वाक्य का अनुभव मलंग बाबा की मुलाखात से भक्तों को मिल जाया करता था। हाजी बाबा की निगाहों से, वाणी से उनका भक्त के प्रति जो प्रेम प्रतीत होता था, उस वर्षाव में भक्त स्वयं डूब जाते थे। भक्त कोई भी मामूली या गहन सवाल लेकर उनके दरबार में जायें, वे उससे इस तरह प्रेमभरी बातें करते थे, उसे इस तरह पनाह में लेते थे कि भक्त एक ही क्षण में उनका बन जाता था। उनके लिए हर भक्त एक–सा था। वे उसकी पूछताछ करते थे, जीवन जीने का आत्मविश्वास भक्त में पैदा करते थे, उनके हर सवाल का जवाब – चाहे वह सवाल कितना भी मामूली क्यों न हो – वे उसके हर सवाल का जवाब उसी अपनेपन से बिना नाराज हुए दे दिया करते थे। वे भक्त से कभी नाराज़ नहीं होते थे और न ही कभी उसका अनादर करते थे – यह उनकी कार्यपद्धति थी। उनकी भाषा ऊर्दु हिंदुस्तानी जरूर थी, मगर कोई भी कठीन पारमार्थिक विषय का विवेचन वे बड़े ही आसान शब्दों में भक्त के लिए कर दिया करते थे। वंश विमोचन और उसके लिए हवन विधि का जब विवेचन किया गया तब पूजा के लिए एक विद्वान पुरोहित को बुलाया गया और हाजी बाबा ने उन्हें वेदों में बताये गए शास्त्राधार सुनाए। इन मुलाखातों का असर श्री गोगरे गुरूजी पर ऐसा हुआ और उन्हें यह शास्त्रीय विवेचन इस तरह अखरा कि पहले पाँच सालों तक वंश विमोचन का विधि कल्याण में हाजी मलंग के पहाड़ पर जो करना आवश्यक था, उन विधियों की जिम्मेदारी गुरू जी ने स्वयं सम्भाल ली तथा हर हवन विधि के लिए खुद उपस्थित रह कर ये विधि सम्पन्न की।

औंदुबर क्षेत्र में सेवा करने के बाद जब वं. दादा वापस आये तक उनके पास असीम परमार्थिक सम्पत्ति थी मगर उनकी पारिवारीक स्थिति बहुत ही अस्थिर बन गई थी। रहने के लिए जगह नहीं, धन कमाने का कोई साधन नहीं, पूरे परिवार को एकत्रित रहने की स्थिति ही न थी, दुनिया ने पूछे हुए किसी भी सवाल का जवाब खुद के भवितव्य के बारे में देना असम्भव था। आज्ञानुसार पर्याप्त सेवा जब तक पूरी न हो जाय, किसी को भी गुरू दक्षिणा रखने की अनुमति नहीं थी। इस अवस्था में उपासना, साधना करना, लोगों की सेवा करना, दुःखी जीवों की प्रापंचिक, आर्थिक समस्याएँ सुलझ रहीं है इसकी खुशी मनाना मगर खुद किसी भी अपेक्षा की आशा न रखना ऐसी कठीन स्थिति इस परिवार की थी। इस तरह पूरा परिवार संकटग्रस्त था। उस समय उनके परिवार को सहारा दिया हाजी बाबा के लोगों ने। रात–रात भर मुलाखातें होती रहती और कभी–कभी तो सिर्फ पानी ही पीकर सब सो जाते थे। हाजी बाबा के शब्दों के सामर्थ्य में तो भूख–प्यास की निशानी ही मिट जाती थी। कठीन समस्या में जिस तरह एक माँ अपने बच्चे की देखभाल करती है उसी प्रकार हाजी बाबा

ने इन सबकी परवरिश की। कामकाज़ के लिए आने वाले हर भक्त को भी यही अनुभव मिलना था तथा हाजी बाबा अपने ही परिवार के एक सदस्य है ऐसी भावना होती थी। उस समय जिन भक्तों ने यह अनुभव लिया है, वे उसे इस जनम में कभी भी भूला नहीं पायेंगे। एक दिन ऐसे ही एक मुलाखात में हाजी बाबा बड़े नाज़ोअन्दाज से बोले, "यहाँ पूना में हमारा बड़ा मकान होने वाला है और उसके बाद हम इस कार्य को परदेश ले जाने वाले हैं। दादा जी को दुनिया के शहनशाह बनाने वाले हैं।"

समयोपरांत इस कार्य की पहचान धीरे–धीरे लोगो को होने लगी, तब इस समिति के कार्य के लिए स्वतंत्र वस्तु होना आवश्यक है ऐसा ख्याल उभरा तब 'द्वारकामाई' का प्लान हाजी बाबा के मार्गदर्शन के अनुसार बनाया गया। कार्य बढ़ता गया तब इस कार्य के लिए जगह–जगह जाने के लिए सवारी की आवश्यकता होने लगी तब उन्ही की दुवा से मोटर खरीदी गई और इस तरह कार्य की नींव डालकर आगे का कार्य अन्य विभूतियों के हाथों में सौपकर हाजी बाबा ने 'अलविदा' कहा।

इसके बाद भारत में जगह–जगह कार्य केन्द्र स्थापन हुए और लंदन में भी केन्द्र स्थापन किया गया। हाजी बाबा की ज़बान की सच्चाई का अनुभव लोगों ने लिया। सेवक तैयार हुए, ऊँकार साधना सिद्ध हुई। भक्त भाविकों के प्रापंचिक सवाल हल करते–करते उन्होंने उनके जीवन में परमार्थ का बीज किस तरह बोया ये किसी ने नहीं जाना, मगर लोग इस स्थित्यंतर का अनुभव लेने लगे। समस्या लेकर आया हुआ भक्त अपने जीवन के प्रति ज्ञान प्राप्त करे, जो उनकी चाहत थी वह साकार होने लगी। दुनिया में जनम को आया हुआ हर व्यक्ति मानव धर्म का पालन करे यह जो उनकी तत्वप्रणाली थी जिसे लेकर वे 700 सालों तक अपने दरगाह में उचित माध्यम का पूरा सहकार्य प्राप्त होते ही कार्यान्वित होने लगी। सम्मेलन होने लगे और उन सम्मेलनों द्वारा वं. दादाजी की वाणी से जो अपौरूपेय ज्ञान अमृतधारा बहने लगी उसमें भक्त अंतबाह्य डूब गये। कार्य स्थापना का उद्देश्य सफल हुआ। ऐसे ही एक सम्मेलन में प.पू. हाजी बाबा का आगमन वं. दादा के माध्यम से हुआ और उन्होंने कहा :

"मुझे बहुत खुशी हो रही है। ये मेरी किस्मत मानता हूँ कि मैंने मेरे हाथ से जिस झाड़ को लगाया था उसका फूल आज देखने की बहार मेरी जिंदगी में आई। इन्शा अल्ला फल भी देख लूँगा इतनी उम्मीद है मेरे पास। उस वक्त हम चार आदमी बैठते थे और दुनिया के आगे के जमाने के बारे में कुछ सोचते थे। उस वक्त आपको लगता होगा, क्या बकवास हो रहा है। लेकिन हमारी बातें नहीं भागती, आदमी भागता है।"

इसके आगे भी एक महत्वपूर्ण कार्य बाकी था। विभिन्न समाज के, धर्म के, जाति के लोग वं. दादा के अथक परिश्रम से इकट्ठा हुए थे। कार्य के मार्गदर्शन का लाभ सबको मिल रहा था। अब सिर्फ एक कार्य बाकी रह गया था और वह था, देवदेवता और उनकी उपासना इसमें जो भेदभाव था, उसे मिटाकर उन सबको एक ही शक्ति को फिर से इस भूमि पर आह्वानित करके उसका 'स्थान' या 'पीठ' स्थापना करना जिसके परिणाम के एक ही उपास्य देवता, एक ही उपासना पद्धति और एक ही कुलधर्म का पालन करने से सभी मानव एक ही स्तर पर जी सके। यह महत्वपूर्ण कार्य 'बत्तीस शिराला' में श्री गोरखनाथ जी की कृपा से कार्यान्वित हुआ। उस समय वं. दादा जी को दिल का दौरा पड़ा मगर यद्यपि डॉक्टर ने 90 दिन का पूरा आराम करने को कहा था, फिर भी 20 वें दिन वं. दादा आठवें सम्मेलन में उपस्थित हुए और शक्ति पीठ का आह्वान वहाँ किया गया। उस समय भी प.पू. हाजी बाबा का आगमन वहाँ हुआ। यह मुलाखात अलग थी, इसमें जोशीलापन या, वं. दादा जी के प्रति कृतार्थ भाव या और भवितव्य के प्रति आत्मविश्वास था। उस समय प.पू. हाजी बाबा बोले, "ये जो पूरे विश्व के तीन तत्व हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये साक्षात परब्रह्म हैं ये कहते–कहते वेद थक गये। लेकिन इन्हें साक्षात् करने की ताकत किसकी है? तीन से एक प्राप्त हुआ और दो नहीं हैं तो 'साक्षात् परब्रह्म' नहीं हुआ। जब तीन मिलके आयेंगे तो परब्रह्म है। वो ताकत मेरे बच्चे ने पैदा की और ये दुनिया के मुश्किल की चीज़ आपके झोली में हम लोग दे रहे हैं।

इसका प्रतीक 'श्री साई शक' आपको मिलने वाला हैं साई शक का मायना 'विश्वबंधुत्व' का ऐक्य करने वाला शक। विश्व की बुराई जाकर प्रेम पैदा हो जाये। आपने प्रेम दिया हमने स्वीकार किया। हमने प्रेम दिया आप लेते गये। अब आप दुनिया को प्रेम देते जाइये। एक दिन ऐसा आयेगा कि दुनिया में प्रेम का गीत गाया जा रहा है। वो सोने का दिन आने के लिए मुश्किल नहीं जब हमारा तन–मन–धन गुरू से मिला हुआ है।"

आज की सामाजिक स्थिति में जिसकी अत्यावश्यकता है वह प्रखर आत्मविश्वास इस बोध में है – इसका अगर हमने हमेशा स्मरण और चिंतन (मनन) किया तो उन्हें जो कार्य हम गुरूबंधु भगिनी के माध्यम से कराना है उसके प्रति हमने अपना कर्त्तव्य निभाया है, ऐसा हम कह पायेंगे।

विश्वशांति की ख्वाहिश रखने वाले ऐसे श्रेष्ठ विभूति का आज उरूस है और उसके साथ–साथ उनके इस परम कार्य में उनका पूरी तरह साथ निभानेवाले, उनसे एकरूप होनेवाले हमारे परम गुरू वं. दादा का जन्मदिन भी आज ही है। दोनों

के माध्यम में दो गुणों का आविष्कार या – नम्रता या 'झुकना' तथा 'सेवाभाव'। प.पू. हाजी बाबा के शब्दों में कभी भी उनकी विभूति अवस्था की जिक्र नहीं होता था, उसी तरह व. दादाजी के बोलचाल में भी कभी इतने श्रेष्ठ विभूति का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, उनका 'संचार' प्राप्त हुआ है ऐसा भाव व्यक्त नहीं होता था। 'दिया उसका भला, नहीं दिया उसका भी भला' इस परम वाक्य का अर्थ पैसा या गुरू दक्षिणा से सम्बन्धित नहीं था बल्कि आने वाले हर भक्त को यह विश्वास दिलाया जाता था कि 'तुम भक्ति करो या न करो, सेवा करो या ना करो, मैं तुम्हें जीवन पर कृपा ही करता रहूँगा क्योंकि यह मेरा कर्त्तव्य है।' – इस तरह का सेवा भाव उनकी वाणी में था और इसी तत्व प्रणाली का सोचविचार हमें भवितव्य में करना उचित होगा। प.पू. हाजी बाबा के पास जो नम्र सेवाभाव था उसका अनुभव हम उनकी एक मुलाखात से ले सकते हैं। उस समय उन्होंने कहा :

"भगवान की आज्ञा से हम विभूति परलोक से इहलोक आते हैं वह इसलिए कि हमें आप जैसे भक्तों से ज्ञान प्राप्ति हो। ज्ञान प्राप्ति के लिए हमने जो तपश्चर्या की, उससे हमारे जीवन ईश्वररूप हुए मगर उस समय खुदा ने हमें खुद यह बोध कराया कि 'तुम विभूतियों ने ईहजन्म की पूरिपूर्णता प्राप्त करके मेरे रूप को चराचर में देखा है फिर भी यह ज्ञान मैंने दिये हुए कृपाशीर्वाद का रूप 'रूपये में दो आने' इतना ही हैं बाकी बचे हुए चौदह आने आपको मुक्तावस्था या मोक्ष प्राप्त करने से मिलने वाला नहीं अतः फिर से देह धारण न करते हुए किसी अच्छे माध्यम के जरिये यह ज्ञान आप प्राप्त कर ले और 'सर्वाभूति आत्मा एक है' इस आदितत्व के अनुसार मानवी 'सहिष्णुता' निर्माण करने का कार्य आप करें तथा भक्तों को यह ज्ञान दें कि देवदेवताओं की शक्ति किसी समस्या का हल करने के लिए उपयोग में न लाये बल्कि यह शक्ति सत्कर्म करने के लिए है। इस तरह का आचरण अगर हमने किया तो पातक प्रमादों का विमोचन अपने आप ही हो जायेगा। इस तरह हर मनुष्य को विकसित बनने का मार्ग दिखाकर भक्तिहीन, भावहीन, निष्ठाहिन, सबुरीहीन इन्सान को गले लगाकर उसके पास की क्षणिक भाव जब तक 'स्फूर्त भावना' न बने तब तक उसकी सेवा करने के लिए तैनात रहने से मेरे कृपाशीर्वाद का परिपूर्ण ज्ञान आपके साथ हो जायेगा और फिर यही कार्य दुनिया में 'मानवीय कल्याण का प्रतिक' बन जायेगा।"

इस तरह समिति का यह कार्य खड़ा हुआ और पू.पू. हाजी बाबा तथा श्री सदगुरूनाथ दादा इस कार्य के 'सेवक' बन कर रहे। यद्यपि आज इन दोनों का उरुस उत्सव है फिर भी इनका संजोग श्री क्षेत्र औदुंबर को ही हुआ था। आज इन दो शक्तियों का कृपाशीर्वाद हमें प्राप्त हो रहा है। इस अमर्पाद तेजतत्व का एक–एक अंश धारण करके उसे वृद्धिंगत करने की चाहत अगर हमने रखी तो उनके इच्छानुसार दुनिया को 'मानवता–धर्म का फल हम दे सकेगें। इस अलौकिक कार्य में शरीक होने का सद्भाग्य हम सब को प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना आज उनके चरणों में हम करें।

जन्म जन्म का सेवक

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

''साई निकेतन''

AA "kHk Hkor AA

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible